www.xtrapapers.com

M15/1/AXHIN/SP1/HIN/TZ0/XX

Diploma Programme
Programme du diplôme
Programa del Diploma

Hindi A: literature – Standard level – Paper 1
Hindi A : littérature – Niveau moyen – Épreuve 1
Hindi A: literatura – Nivel medio – Prueba 1

Friday 8 May 2015 (afternoon)
Vendredi 8 mai 2015 (après-midi)
Viernes 8 de mayo de 2015 (tarde)

1 hour 30 minutes / 1 heure 30 minutes / 1 hora 30 minutos

Instructions to candidates

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a guided literary analysis on one passage only. In your answer you must address both of the guiding questions provided.
- The maximum mark for this examination paper is **[20 marks]**.

Instructions destinées aux candidats

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez une analyse littéraire dirigée d'un seul des passages. Les deux questions d'orientation fournies doivent être traitées dans votre réponse.
- Le nombre maximum de points pour cette épreuve d'examen est de **[20 points]**.

Instrucciones para los alumnos

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un análisis literario guiado sobre un solo pasaje. Debe abordar las dos preguntas de orientación en su respuesta.
- La puntuación máxima para esta prueba de examen es **[20 puntos]**.

2215–0095

© International Baccalaureate Organization 2015

International Baccalaureate
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

www.xtrapapers.com

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (1) तथा (2)। इन दोनों में से किसी **एक** पर साहित्यिक व्याख्या लिखिए। अपने उत्तर में आप दिये गए दोनों सहायक प्रश्नों का समावेश करें।

1.

"पोस्टमैन।" बाहर से आए इस स्वर को सुनकर, भीतर बरामदे में कुर्सी पर बैठे अरविंदों चौक गए। "साध्वी, साध्वी, सुनो देखना तो डाकिया आया है बाहर। व्योम का पत्र लाया होगा।" कुर्सी पर बैठे-बैठे अरविंदों ने आवाज़ दी। रसोईघर से उनकी पत्नी अपनी बार्डर वाली साड़ी से हाथ पोंछती हुई बाहर आई। अरविंदों दास मुखर्जी अभी डेढ़ साल पहले ही कलकता विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र के प्रोफेसर के पद से रिटायर हुए हैं। प्रोफेसर मुखर्जी एक शांत, सरल एवं सौम्य स्वभाव के संवेदनशील व्यक्ति हैं। उनकी पत्नी साध्वी मुखर्जी एक सुलझी हुई गृहिणी हैं। शादी के बाद कई वर्ष पहले साध्वी ने एक लाइब्रेरी में नौकरी भी की पर बेटी श्रावणी के जन्म के बाद उन्होने निर्णय लिया की वह नौकरी नहीं करेंगी। घर पर ही रहेंगी और अपने बच्चों की अच्छी परवरिश करेंगी, उन्हें जीवन मूल्य देंगी, ढेर सारे वक्त के साथ। साध्वी ने अपने लक्ष्य को प्राप्त भी कर लिया था। बच्चों को बहुत कुछ दिया, जो शायद उनके विचार में वह नौकरी कराते हुए न दे पातीं। बेटी श्रावणी ने कंप्यूटर साइंस में पोस्ट ग्रेजुएसन करने के बाद एक अच्छी कंपनी में नौकरी कर ली। प्रोफेसर ने बेटी का व्याह जमशेदपुर के एक खानदानी व्यापारी घर में कर दिया। प्रोफेसर बेटी का व्याह रिटायरमेंट से पहले कर लेने से बहुत खुश थे। जहां तक बेटे व्योम की बात है तो वह एक बहुत ही महत्त्वाकांक्षी युवक है। व्योम ने कलकत्ता के इंजीनियरिंग कॉलेज से फ़र्स्ट क्लास में केमिकल इंजीनियरिंग की डिग्री ली। प्रोफेसर फिर से प्रसन्न हुए, संतुष्ट हो गए। पर व्योम, वह कतई संतुष्ट न था। व्योम ने अपनी इच्छा जताई, वह इंग्लैंड की ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से एमबीए की डिग्री लेना चाहता था। प्रोफेसर राजी न हुए। सोचा एक ही बेटा वह भी सात समंदर पर, मेरी आँखों से दूर। साध्वी भी एकबार तो भड़क उठी।साफ इंकार कर दिया। व्योम आकाश से धरती पर आ गिरा।व्योम उस दिन सारी शाम तक लापता रहा। हुगली के किनारे घंटो रोता रहा। देर रात घर लौटकर आया और बिन भोजन किए सो गया। प्रोफेसर तो थे ही मोम के पुतले, पिघल गए। बेटे को एक दिन भी उदास न देख सके। मान गए। व्योम को हजारों रुपये महीने पर ट्यूशन रख दी। प्रवेश परीक्षा की तैयारी में कोई कमी न छोड़ी। व्योम छह महीने बाद इंग्लैंड में था। उसके जाने के बाद काफी कुछ बादल गया। बेटी श्रावणी की शादी के बाद प्रोफेसर बेटी से अलग हो गए और व्योम की महत्त्वाकांक्षा उन्हें बेटे से दूर ले गयी। अब वे पाँच कमरों में दो ही जन हैं। जब व्योम ने एमबीए की पढ़ाई खत्म कर ली तो प्रोफेसर ने व्योम से इंग्लैंड में लंबी बात की थी। "बाबूजी, मैं अभी वापिस नहीं आ पाऊँगा।" व्योम ने हिचकिचाहट भरे स्वर में पिता को वापस न आने की सूचना दी थी। "बाबूजी, मुझे यहाँ नौकरी मिल गयी है।" व्योम के स्वर ने प्रोफेसर को जड़ कर दिया। प्रोफेसर का लाड़ला उनसे दूर रहने लगा। अब व्योम बहुत व्यस्त रहता है। अब माता, पिता और व्योम में एक समझौता सा हो गया कि व्योम हर रविवार रात को फोन करेगा। पर अबकी दो रविवार बीत गए, व्योम का कोई फोन नहीं आया। प्रोफेसर ने इस रविवार को खुद फोन करने कि सोची। हालांकि बेटे की व्यस्तता से वह भयभीत से रहते। "हाँ व्योम। बेटा कैसे हो? तबीयत ठीक है न? फोन नहीं किया तुमने?" "हाँ बाबूजी, मैं तो ठीक हूँ। व्यस्त था सो फोन न कर सका। बाबूजी यहाँ इस समय भारत की तरह यहाँ रात नहीं है।" व्योम ने समाजशास्त्र के रिटायर प्रोफेसर को सामान्य ज्ञान से अवगत कराया। एक महीने तक व्योम की ओर से कोई फोन या पत्र नहीं आया।

www.xtrapapers.com

प्रोफेसर उदास रहने लगे। उनका सारा समय व्योम के बचपन की तस्वीरों और उसकी पुरानी इंजीनियरिंग की किताबों के बीच बीतता। नमस्ते माताजी, यह व्योम बाबू ने पार्सल भेजा है। प्रोफेसर उत्सुकतावश लिफ़ाफा खोलने में लग गए। प्रोफेसर ने लिफाफे से दो आसमानी रंग की लंबी टिकटें निकाली। साथ में एक सफ़ेद रंग का कार्ड भी था। बाहर अंग्रेज़ी मे लिखा था, “मिस्टर एंड मिसेज अरविंदो दास मुखर्जी।” प्रोफेसर ने उसे तेजी से खोला। भीतर एक कार्ड पर सुनहरे अक्षरों मे लिखा था – व्योम मुखर्जी एंड डोरेथी कॉरडियली इनवाइट्स यू एज़ व्योम वेड्स डोरेथी।
आर.एस.वी.पी.
अवर स्वीट सन।

शैलजा कौशल, कथा समय (2012)

(a) कहानी में प्रस्तुत कथानायक की मन:स्थिति और परिस्थिति के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं?

(b) लेखक द्वारा कहानी कहने और इस कहानी के समग्र प्रभाव के बारे में आप क्या कहना चाहते हैं?

www.xtrapapers.com

2.

लड़की और सड़क

लड़की खड़ी है सड़क पर,
भाँप रही है, समझ रही है
सड़क को
गर इस पर चले, तो
जाने कहाँ ले जाएगी सड़क?
हो सकता है वहाँ, जहां उसे जाना न हो,
तो क्यों न वह अपनी सड़क खुद बनाये?
लड़की ने ख्वाब बुनने शुरू कर दिये हैं।
वह सोचती है कितनी बड़ी दुनिया!
कितने लोग हैं यहाँ!
सबकी सोच अलग, सबकी मंजिल अलग।
सभी एक ही सड़क से गुजरते हैं।
कितना तकलीफ़देह होता होगा,
क्यों नहीं सभी अपनी सड़क बना लेते?
सफर कितना आसान, कितना
आनंददायक हो जाता?
वह तो अपनी सड़क खुद बनाएगी?
मिट्टी, रेत, सीमेंट इकट्ठे करना
शुरू कर लिया है उसने
हंगामा मच गया
लड़की सड़क बना रही है।
अपनी सड़क॥
भला यह लड़कियों का काम है?
लोग क्या कहेंगे?
लड़कियों का काम सड़क पर चलना है,
सड़क बनाना नहीं
सड़क तो मर्द बनाते है
फेंको यह मिट्टी, वह मिट्टी, यह रेत
लड़की बनाएगी सड़क!!!
लड़की खड़ी है सड़क पर अब भी
सोच रही है अब बनेगी उसकी
खुद की सड़क, अपनी सड़क।

सविता प्रथमेश मिश्र, नवनीत (2009)

www.xtrapapers.com

(a) कविता के शीर्षक पर अपने विचार प्रकट कीजिये और बताइये कि कविता के संदर्भ में यह कहाँ तक सार्थक है?

(b) आपके अनुसार कविता की भाषा और शैली का सम्पूर्ण कविता को समझने एवं प्रभावी बनाने में क्या योगदान हैं?